शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विजयदान देथा के कथा-साहित्य में चित्रित ग्रामीणजीवन

डॉ. मुकेश कुमार
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
रामपुरा, तहसील हाँसी, जिला हिसार
हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

राजस्थानी साहित्य के प्रमुख लोक-कथाकार विजयदान देथा का संपूर्ण कथा-साहित्य ही लोक या ग्रामीण जीवन को समर्पित है। इन्होंने अपने कथा-साहित्य में ग्रामीण-जीवन और परिवेश की रूढ़ियों, अंधविश्वासों, आडंबरों, आपदाओं-विपदाओं और अभावों जैसी अनेक प्रकार की जटिलताओं के साथ ही ग्रामीणों की सादगी, सरलता, निश्छलता, कर्मठता, मैत्री-सौहार्द और संवदेनशीलता जैसी अनेक मनवोचित मांगलिक सद्वृत्तियों का भी स्वाभाविक, सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया है। मानवता को जो संदेश या प्रेरणा ग्रामीण-जीवन और परिवेश दे सकता है, वह ज्ञान-विज्ञान व नगरीय-जीवन नहीं दे सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में विजयदान देथा के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

विजयदान देथा मूलतः राजस्थानी के प्रख्यात लोक-कथाकार हैं। लोक-कथाओं का ऐसा संरक्षक, संग्राहक एवं प्रस्तोता बहुत ही दुर्लभ है। लोक के प्रति इनका विशेष भावात्मक लगाव रहा है। भारत में लोक के साक्षात् दर्शन ग्रामीण जीवन एवं परिवेश में ही संभव हैं, क्योंकि यहाँ की लगभग 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में ही बसती है। विजयदान देथा का जन्म भी राजस्थान के बोरूंदा (जोधपुर) नामक गाँव में ही हुआ था। श्री देथा जी ने जन्म से ही ग्रामीण जीवन के कष्टों को बहुत ही करीब से देखा और अनुभव किया है। नगरीय या शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन कहीं अधिक जटिल एवं दुरूह है। इसके बावजूद भी यहाँ की सादगी, कोमलता, निश्छलता, निरीहता, संवेदनशीलता, भावात्मकता, नैसर्गिक जीवन, कठोर श्रमिकता और अदम्भ्य जिजीविषा जैसी अनेक मांगलिक सद्वृत्तियाँ ही इसे नगरीय जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक सुंदर एवं आकर्षक बनाती हैं। इसी आकर्षण के परिणामस्वरूप ही लेखक जीवन-पर्यन्त तक गाँव से ही जुड़े रहे।

वर्तमान वैज्ञानिक एवं अति-भौतिकवादी युग का सर्वाधिक प्रभाव नगरीय जीवन पर पड़ा हैं, जिसके कारण आज व्यक्ति निरंतर स्वार्थी एवं आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। इसीलिए भौतिक सुख-समृद्धि के बावजूद भी वह सुखी नहीं है। वह पारस्परिक ईष्र्या एवं द्वेष की आग में निरंतर जल रहा है। उसकी इसी प्रवृत्ति के कारण आज हर तरफ आपाधापी, लूटपाट, हिंसा, हत्या-आत्महत्या जैसी अनेक त्रासद घटनाओं के कारण अशांति, भय एवं आतंक का माहौल बना हुआ है। नगरीय जीवन के ऐसे ही भयावह वातावरण का परिचय देते हुए स्वयं लेखक विजयदान देथा कहते हैं कि "क्या सभ्यता के नाम पर यही शेष

रह गया है। पाशविक और हिंसक प्रवृत्तियों का अनन्त इजाफा, सामूहिक नर-संहार, सामूहिक बलात्कार, आतंकवादियों का बुलंद हौंसला, धार्मिक असहिष्णुता, फैशन-शो के बहाने सुन्दरियों का अर्द्ध-नग्न प्रदर्शन, जो दर्शकों की काम-लिप्सा को उत्तेजित करता है।"1

नगरीय जीवन की यही विद्रूपता लेखक को निरीह ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित करती है। इसी के साथ लेखक को इस बात की भी चिंता सता रही है कि कहीं नगरीय-जीवन की विषाक्त हवा ग्रामीण-जीवन को भी संक्रमित न कर दे। अपनी इसी चिंता के वशीभूत होकर लेखक ने ग्रामीण-जीवन की जटिलताओं एवं सद्वृत्तियों को अपने साहित्य में लोक कथाओं के माध्यम से सहजने का एक स्तुत्य प्रयास किया है। इनके साहित्य में लोक-कथाओं के द्वारा ग्रामीण-जीवन का इतना विशद, साकार, सुंदर एवं जीवंत चित्रण को देखकर ही विख्यात फिल्मकार मणिकौल ने अभिभूत होते हुए लेखक को कहा है कि "तुम तो छुपे हुए ही ठीक हो। ... तुम्हारी कहानियाँ शहरी जानवरों तक पहुँच गयीं तो वे कुत्तों की तरह उन पर टूट पड़ेंगे। ... गिद्ध हैं नोच खाएँगे। तुम्हारी नम्रता है कि तुमने अपने रत्नों को गाँव की झीनी धूल से ढँक रखा है।"2

उपन्यास साहित्य में ग्रामीण जीवन

लेखक विजयदान देथा ने अपने कथा-साहित्य (कहानियाँ एवं उपन्यास) में लोक-कथाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन एवं परिवेश का ही यथार्थ एवं सजीव चित्रण किया है। यहाँ पर गाँवों की भौगोलिक स्थिति एवं परिवेश के साथ ही ग्रामीणों का रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, आजीविका के साधन, कठोर परिश्रम, अभावग्रस्त जीवन, भूख, गरीबी, आस्थाएँ, जातिगत भेदभाव, भाग्यवाद, शकुन-अपशकुन, जमींदारी प्रथा, महाजनी सभ्यता, शोषण आदि का साकार एवं जीवंत चित्रण हुआ है।

विजयदान देथा ने अपने कथा-साहित्य के अंतर्गत 'रिजक की मर्यादा' और 'मायाजाल' दोनों ही लघु उपन्यासों में ग्रामीण जीवन और परिवेश का स्वाभाविक, यथार्थ एवं जीवंत चित्रण किया। 'रिजक की मर्यादा' उपन्यास में शंकर भाँड़ और मायापति सेठ के दोनों ही गाँवों के ग्रामीणों का सरल, निरीह, निश्छल व दुरूह जीवन और वहाँ के नैसर्गिक वातावरण का बड़ा ही मार्मिक व सजीव चित्रण हुआ है। यहाँ पर मुख्य पात्र शंकर भाँड़ के साथ ही उसकी पत्नी पारबती, चौधरी और उसकी पत्नी सरजू, चैधरी बाबा, मायापति सेठ, सरवण आदि विशिष्ट ग्रामीण पात्रों के माध्यम से ग्रामीण जीवन का सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिचय दिया है।

उपन्यास के प्रारम्भ में ही लेखक ने ग्रामीण प्रकृति एवं परिवेश का बड़ा ही मनोहारी एवं मांगलिक चित्रण किया है। शंकर भाँड व उसके गाँव वालों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। सभी ग्रामीण अपने-अपने पुश्तैनी काम धँधें करके गुज़र-बसर कर रहे हैं। शंकर भाँड़ भी उन्हीं में से एक है, जो अपना पुश्तैनी काम बहुरूपीये का स्वाँग भरकर लोगों का मनोरंजन करता है। वह कभी महात्मा, कभी मुनि और कभी डायन का स्वाँग भरता है। उसका यह स्वाँग स्वाभाविक और वास्तविक होता है। वह अपना यह काम पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से करता है। यहाँ तक कि वह अपने रिजक (पेशा) की मर्यादा के लिए अपने प्राणों तक को भी दाँव पर लगाने में संकोच नहीं करता है। उसके इस स्वाँग का भेद तब तक नहीं खुल पाता है, जब तक वह स्वयं उसके भेद को प्रकट नहीं करता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एक बार शंकर भाँड़ के परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी अधिक दयनीय हो जाती है कि भूखे मरने की नौबत तक आ जाती है। ऐसी स्थिति में वह एक दिन सुबह एक महात्मा का स्वाँग भरकर गाँव से निकलता है और वह पूरा दिन पैदल चलने के बाद संध्या को चौधरी और मायापति सेठ के शिव गाँव में पहुँचता है। एक पहुँचे हुए सिद्ध महात्मा के वेश में वहाँ पर उसका बहुत मान-सम्मान होता है। वहाँ पर वह लोभ-लालच, मोह-माया और सुख-दुःख से हटकर केवल वैराग्य की ही बात करता है। उसकी इन बातों से वहां मायापति सेठ इतना प्रभावित होता है कि वह उसे गाँव के रामदुआरे में चौमासा करने का आग्रह करता है। प्रारम्भ में तो महात्मा स्पष्ट मना कर देते है। लेकिन सेठ व गाँव वालों की श्रद्धा, समर्पण एवं सेवा भाव को देखकर वह वहां पर रहने को राजी हो जाता है। यहां तक कि सेठ तो उसके ज्ञान से प्रभावित होकर, अपने जीवन-भर की कमाई (अकूत माया) उनके चरणों में समर्पित तक कर देता है, लेकिन महात्मा अपने रिजक की मर्यादा के लिए उस अकूत माया को ठुकरा भी देता है। अपने इस स्वाँग के दौरान वह अनेक प्रकार से ग्रामीणों की सहायता करता है। वर्षों से गाँव के रामदुआरे में पाखंड और भोग-विलास का धंधा करने वाले साधु और जोगीनियों को बाहर निकालकर, रामदुआरे और ग्रामीणों को उनके आतंक और पाखंड़ से मुक्त करवाता है। इसी बीच चौधरी बाबा के भतीजे सरवण की सर्पदंश से रक्षा करता है। अपने इस चैमासे के दौरान कोई भी ग्रामीण उसके स्वांग को पहचान नहीं पाता है। चौमासे के बाद वह स्वयं अपने इस स्वाँग का भेद प्रकट कर ग्रामीणों से पुरस्कार एवं बख्शीश माँगता है। इसके बाद भी वह मयापति सेठ अपनी अकूत माया उसे सौंपना चाहता है, लेकिन इसको वह यह कहकर अस्वीकार कर देता है कि वह एक महात्मा न होकर, एक भाँड़ है। उस समय सेठ की श्रद्धा केवल एक महात्मा के वेश के प्रति जाग्रत हुई थी, न कि किसी भाँड़ के प्रति। वह पाप की कमाई लेकर पाप का भागीदार नहीं बनना चाहता है और वह तो केवल अपने परिश्रम का ही पुरस्कार लेना चाहता है। इसीलिए वह चौधरी बाबा द्वारा दी गई, केवल 108 मोहरें ही स्वीकार करता है और बड़ी प्रसन्नता से अपने गाँव लौट जाता है। वह तो केवल अपने काम का ही श्रम चाहता है, कोई दान नहीं।

शिव गाँव की उपरोक्त घटना के बारे में जब नगर के राजा को पता चलता है, तो वह यह देखना चाहता है कि क्या वह शंकर भाँड़ राजा के उपहार को ठुकराने का साहस कर सकता है या नहीं। इसके लिए राजा शंकर भाँड़ के लिए 1000 मोहरें उपहार स्वरूप देकर, अपने एक सैनिक को उसके पास भेजता है। पहले तो वह राजा का यह उपहार लेने से स्पष्ट मना कर देता है लेकिन सरजू भाभी के कहने पर वह उनको स्वीकार कर लेता है। शंकर भाँड़ और सरजू भाभी उस धन को ग्रामीणों के उद्धार में लगा देते हैं। इसके बाद शंकर के गाँव में खुशहाली लौट आती है। लेखक उसके गाँव की इसी खुशहाली का चित्रण करते हुए कहता है कि "सो, उस गाँव के लोग देखते रहे और गाँव की काया-पलट होने लगी। जिसके पास जितनी जमीन थी, सब में कुएँ खुदने लगे। हाथोंहाथ। सभी एक दूसरे को सहयोग करने को आतुर। ...बादलों के भरोसे घर-घर में बीज सुरक्षित पड़ा था, वह खेतों की क्यारियों में लहराने लगा। जुलाहों के लिए पास के शहर से रंग-बिरंगा सूत आ गया। .... प्रजापतियों के सुघड़ हाथों से घूमते चाकों पर गीली माटी अपनी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काया का मनचीता आकार लेने लगी।... सुथारों की खतोड़ में कुल्हाड़ी, बसोला, रन्दा, करौत, चौरसी, हथोड़ा, एरण और गिरमिट में परस्पर होड़ मचने लगी कि कौन कितना कारगर हैं? ....लुहारों की धमनियाँ चालू हो गयी। ....सुनार चाँदी के गहनों पर आखर उकेरने लगे। लखारों की सुरंगी कारीगरी लाख पर चित्रित होने लगी। बाड़े-बाड़े में गाएँ रम्भाने लगी। बछड़े उछल-कूद मचाने लगे। ... लगातार तीन साल के अकाल की मार से अधमरा गाँव हँसने-मुस्कराने लगा। धरती के कण-कण में प्राण संचरित हो उठे। देखते-देखते हाथों की करामात से गाँव जी उठा। गोबर लीपी दीवारों पर माँडने चित्रित हो उठे।"3 लेखक ने यहाँ पर ग्रामीण जीवन और परिवेश का साकार और जीवंत चित्रण किया है।

लेखक ने इसी प्रकार 'मायाजाल' उपन्यास में भी कुम्हार और सेठ के गाँव का जीता-जागता चित्रण किया है। इस गाँव के ग्रामीण भी गरीबी और अभाव में ही जीते है और अपने-अपने पैतृक व्यवसाय के प्रति ही समर्पित है। सुख की आशा में ही वे दिन-रात कठोर परिश्रम करते रहते हैं, लेकिन वह सुख उन्हें स्वप्न में भी नसीब नहीं हो पाता है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र कुम्हार व कुम्हारी उस गाँव के ऐसे ही व्यक्ति हैं, जो अपने गाँव के कच्चे मकान में वर्षों से अपना पुश्तैनी काम करते हुए, गरीबी एवं अभाव में ही अपना जीवन जीते आ रहे है। उनका दस वर्षीय लड़का लछमन है, जो अभी से ही अपनी पुश्तैनी विरासत को संभालने लग जाता है। वह अत्यंत ही कर्मनिष्ठ एवं समर्पित है। लेखक एक स्थान पर उसकी इसी कर्मनिष्ठता का परिचय स्वयं उसी के शब्दों में देते हुए कहता है कि "बस, एक बिलोवना और, पूरे ग्यारह तो घड़ने दे। मुझे तो काम के अलावा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। न कलेवा, न खाना।"4 लछमन के माता-पिता उसके ऐसे भविष्य के विषय में सोचकर अत्यंत संतप्त रहने लगते हैं। शायद इसी कारण गाँव के सेठ के कहने पर ही वे तत्काल अपना पुश्तैनी काम व गाँव छोड़कर, सेठ की नौकरी स्वीकार कर लेते हैं। गाँव से बाहर जाकर वे एक बार माया के जाल में ऐसे उलझे कि उससे जीवन भर निकल नहीं पाए और स्वयं ही अपने पूरे परिवार का विनाश कर बैठते हैं। उनकी इस संपूर्ण घटना का संक्षिप्त परिचय लेखक ने उपन्यास के प्रारम्भ में ही दिया है। लेखक के अनुसार, "वह कुम्हार भी खुश था, वह सेठ भी खुश था, वह डकैत भी खुश था और वह राजा भी खुश था। एक खुश नहीं था तो लछमन और उसकी बहू, जिसका गौना अभी बाकी है। बेचारे, जंगल के पच्छी-जानवर मनुष्य-समाज की अदम्य खुशी का मर्म क्या जानें। सचमुच अपनी किस्म का वह एक ही निराला गाँव था। मामूली-सी ऊँचाई पर आबाद, लेकिन सूरज की पहली किरण सबसे पहले उसे ही प्यार से सहलाती थी। कान में फुसफुसाकर हर रोज राजी-खुशी के समाचार पूछती थी। उस गाँव का तमाम पुश्तैनी इतिहास इस बात का साक्षी है कि चटकती चिनगारी, दहकते अंगार व लपलपाती लौ से वहाँ कभी आग नहीं लगी। मगर सेठ की माया के पुण्य से कुम्हार का घर तो जला सो जला ही, पर अशान्त क्षुधातुर ज्वाल आज दिन भी हर तुलसी के आँगन को उसी तरह जला रही है।"5 यहाँ पर लेखक ने कुम्हार की बर्बादी के साथ ही ग्रामीण जीवन एवं परिवेश का भी यथार्थ चित्रण किया है।

कहानियों में ग्रामीण जीवन

उपन्यासों की तरह ही विजयदान देथा की कहानियों में भी ग्रामीण-जीवन का स्वाभाविक एवं सजीव चित्रण हुआ है। इनकी 'बड़ा कौन',

'आशा अमरधन', 'जाप की महिमा', 'दूरी,' 'कान्ह गुवाल', 'हिम समाधि', 'रोटी की बात', 'नागिन तेरा वंश बढ़े', 'विश्वास की बात', 'लजवन्ती', 'दूजौ कबीर' आदि कहानियाँ संपूर्ण रूप से ग्रामीण जीवन एवं परिवेश से जुड़ी हुई है। इन सभी कहानियों के पात्र, घटनाएँ और भाषा-शैली ग्रामीण जीवन से संबद्ध हैं। इनको पढ़ते समय पाठक पूरी तरह से ग्रामीण-जीवन में ही विचरण करने लगता है। विजयदान देथा की 'बड़ा कौन' कहानी ग्रामीण जीवन से संबंधित एक भोले-भाले एवं निरीह किसान की मार्मिक व्यथा-कथा है। यह कहानी एक किसान के दो बेटों दौलत और दलित के वैयक्तिक एवं पारिवारिक जीवन का उल्लेख करती है। दोनों बेटों के नाम उनके स्वभावानुरूप एवं गुणारूप ही थे। बड़ा बेटा दौलत स्वभाव से ही स्वाथी, चालाक, धूर्त एवं संवेदनहीन था और छोटा बेटा दलित सरल, सहज, निश्छल, परिश्रमी एवं भोला-भाला था। खेतों में कठोर परिश्रम करता था - दलित और आराम से मौज उड़ाता था - दौलत। बड़े भाई के विवाह के बाद दोनों भाई अलग हो जाते हैं। अलग होते समय दौलत ने दलित के भोले-भाले स्वभाव का खूब फायदा उठाया और उसे पैतृक संपत्ति में से केवल थोड़ी-सी ज़मीन ही भरण-पोषण के लिए दी। दलित को ज्यादा की जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि वह तो अब तक केवल पेट की ही लड़ाई लड़ रहा था। एक बार उसने बड़ी ही आशा के साथ खेत में काकड़ी और मतीरे ऊपजाए, लेकिन किस्मत ऐसी निकली कि उनमें बीजों के स्थान पर कंकड़-पत्थर निकले। वे कंकड़-पत्थर वास्तव में हीरे-मोती थे, जो पहचान के अभाव में उसे दिखाई नहीं दिए। उन पर जब एक व्यापारी की नज़र पड़ी, तो वह उनके बदले उसे अकूत दौलत देना चाहता था, लेकिन वह ऐसी दौलत लेने से साफ मना कर देता है, जिसे खाया ही न जा सके। वह केवल साल भर खाने के बाजरी के दानों के बदले ही वे कंकड़-पत्थर उसे दे देता है, जो उसके किसी काम के नहीं थे। लेखक उसके इसी सरल स्वभाव का चित्रण करते हुए कहता है कि "आखिर लक्खी बनजारे के बार-बार आग्रह करने पर वह ज्वार-बाजरी की पचास गूणतियों के बदले भखारी के तमाम कंकर, बचे हुए मतीरे व ककड़ियाँ देने की खातिर मान गया। उलटा लक्खी बनजारे को समझाते कहने लगा, 'मैंने सब हिसाब कर लिया कि इतना सराजाम साल भर के लिए काफी है। न पंछियों के लिए चुग्गे की कमी रहेगी, न कोई साधु-संत भूखा जाएगा। और मुझे भी बैठे-ढाले दो जून रोटियाँ मिल जाएँगी।"6 यहाँ पर चित्रित दलित की ऐसी सरलता एवं सहजता ग्रामीण-जीवन की साकार अभिव्यक्ति करती है।

लेखक की 'आशा अमरधन' कहानी भी इसी प्रकार के गरीबी की मार से पीड़ित एक बेबस किसान की कथा है। कोई भी आपदा या विपदा सर्वप्रथम एक किसान के घर ही दस्तक देती है। कहानी का मुख्य पात्र एक सामान्य किसान है। उसके घर कभी बीमारी आ जाती है, कभी कोई पशु मर जाता है और कभी पत्नी का प्रसव आ जाता है। उसके जीवन में मुसीबतों का आना कभी समाप्त नहीं होता है। इन्हीं के साथ उसकी पत्नी दो वर्षीय लड़की और एक वर्षीय लड़के को छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। यही सबसे बड़ी मुसीबत किसान की जिंदगी में आकर ठहर जाती है। निकट परिजन उसकी भलाई के निमित्त उस पर दूसरे विवाह का दबाव डालते है। दूसरी पत्नी ने आते ही जगत् प्रसिद्ध त्रिया और विमाता चरित्र दिखाना शुरू कर दिया। उसको दोनों बच्चे फूटी आँख भी नहीं सुहाते थे। अंततः वह किसान

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को स्वयं व बच्चों में से किसी एक का चुनाव करने का निर्णय सुना देती है। परिणामस्वरूप लाचार किसान कलेजे पर पत्थर रखकर बच्चों को कोठरी में बंद भूखा रखकर मारने को विवश हो जाता है। वह पत्नी को उन्हें मारने का उपाय सुझाते हुए कहता है कि "... बाहर कूँटा लगाकर बच्चों को भीतर छोड़ देंगे। छींके में राब की हाँड़ी और सोगरे धरकर इन्हें अदीठ किस्मत के हवाले कर दें।"7 भूख इतनी निर्दयी हो सकती है, यह किसान को पहली बार अनुभव होता है। यहाँ पर ग्रामीण जीवन के यथार्थ का नग्न चित्रण हुआ है।

'जाप की महिमा' में भी लेखक ने ग्रामीण-जीवन के किसान व बनजारे के जीवन पर प्रकाश डाला है। गाँव का एक चौधरी अपने किसानी जीवन से तंग आकर घर छोड़ देता है। रास्ते में उसकी भेंट हजारी नामक बनजारे से होती है। चैधरी किसान को बनजारे के जीवन में और बनजारिन को किसान के जीवन में सार नज़र आता है। एक जड़ता से ऊब जाता है, तो दूसरी भटकन से।

लेखक की 'दूरी' कहानी भी एक लुहार के ग्रामीण-जीवन पर आधारित है। हाड़तोड़ परिश्रम व भट्टी के सामने तपने पर भी उसे भूख और गरीबी से मुक्ति नहीं मिलती है। कहानी की मुख्य नारी पात्र एक बूढ़ी हज्जा माऊ है। उसका अड़तीस वर्षीय बेटा झोला एक दिन काम करते-करते अचानक बीमार हो जाता है। उस समय 100 रूपयों में किराये पर जीप करके उसे इलाज के लिए शहर भेजा जाता है। हज्जा माऊ भी बेटे से मिलने के लिए उनके पीछे पैदल ही चल पड़ती है। रास्ते में गाँव का एक बोहरा (सूदखोर) उसकी गरीबी, लाचारी और भोलेपन पर तंज कसते हुए कहता है कि "हील का उठाव हो चाहे बादी का, सौ रूपयों का जूत लगना था, वह लग गया। हज्जा-माऊ, तू ही बता, ये सौ रूपये कर्ज के पेटे जमा होते तो बोझ कम होता कि नहीं ? जीप के मज़े की खातिर बेकार रूपये खोने में कोई एतराज नहीं, मगर मैं जब भी तकाजा करूँ, रोना-रींकना चालू।"8 इसी प्रकार जब वह शहर पहुँचती है, तो वहाँ पर भी लोगों द्वारा उसके भोलेपन का मज़ाक ही उड़ाया जाता है।

लेखक की 'कान्ह गुवाल' कहानी भी एक गाँव के भोले-भाले ग्वाले कन्हैया के माध्यम से ग्रामीण-जीवन का ही चित्रण करती है। वह विषय-वासना और छल प्रपंच से कोसों दूर है। उसके जीवन की सारी संपदा केवल उसका गोधन ही है। एक बार वासना की भूखी स्वयं उसकी भाभी की वह इच्छा पूरी नहीं करता है, तो वह उसके भाई को भड़काकर उसे मारने के लिए भेजती है। जब भाई सहज ही उसे गोधन लेकर गाँव छोड़ने को कहता है, तो वह सहर्ष गाँव छोड़कर चला जाता है और बाहर जाकर वह एक राजकुमारी की पहली पसंद बन जाता हैं। 'हिम समाधि' कहानी भी इसी प्रकार एक ग्वाले के ही ग्रामीण-जीवन पर आधारित है। कहानी का नायक एक बदसूरत ग्वाला बीजानन्द है, जो गाँव के वेदा चारण की सुन्दर कन्या सैण के प्रेम में अंधा होकर, अपने जीवन को भी दाँव पर लगा देता है।

इसी प्रकार 'रोटी की बात' कहानी भी एक बामन के ग्रामीण जीवन पर आधारित है। गाँव का वह बामन निरंतर पूजा-पाठ, ज्ञान-ध्यान और ईश्वर भक्ति में रत रहता था। वह नियमव्रती ऐसा था कि मर जाएगा लेकिन अपने नियमों के विरूद्ध कभी नहीं जाएगा। इसीलिए कोई भी उसे स्वयं उसकी इच्छा के विरूद्ध भोजन नहीं खिला सका।

'नागिन तेरा वंश बढ़े' कहानी में लेखक ने गाँव के प्रवीण एवं तार्किक ग्रामीण वीलिया के

माध्यम से चौधरी के समक्ष करोड़ीधज सेठ के पुत्र और एक नागिन के पारस्पारिक संबंधों की गुत्थी सुलझाई है। इस कहानी में गाँव के रहन-सहन, आचार-विचार, आस्थाएँ, रूढ़ियाँ, शकुन-अपशकुन आदि ग्रामीण मान्यताओं एवं विशेषताओं का सहज चित्रण हुआ है।

'विश्वास की बात' कहानी में गाँव के एक गडरिये की सरलता एवं विश्वास के माध्यम से ग्रामीण जीवन एवं संस्कृति का ही चित्रण किया गया है। यदि उस गडरिये जैसी समझ, सरलता, निश्छलता, लगन, आसाक्ति और इच्छा-शक्ति ग्रामीणों में आ जाए, तो सभी का जीवन सार्थक हो जाए। 'लजवंती' कहानी भी ग्रामीण-जीवन पर ही आधारित है। इस कहानी की नायिका गाँव की सबसे सुंदर, कोमल एवं लजालु स्त्री लजवंती है। यहाँ पर लेखक ने ग्रामीण परिवेश में लजवंती और कबूतरों वाले लड़के के माध्यम से लज्जा, प्रेम और काम-भावना की मुखर अभिव्यक्ति की है। इनमें से काम-भावना ही सर्वाधिक बलवती दिखाई पड़ती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययनोपरांत कहा जा सकता है कि लेखक विजयदान देथा का ग्रामीण-जीवन और परिवेश से घनिष्ठ संबंध रहा है। इन्होंने अपने ग्रामीण-जीवन की सूक्ष्म एवं गहन अनुभूतियों की ही अपने कथा-साहित्य के माध्यम से स्वाभाविक, साकार एवं सजीव अभिव्यक्ति की है। यहाँ पर ग्रामीण-जीवन की दुखद या जटिल अनुभूतियों के साथ ही आदर्श एवं सुखद अनुभूतियों का भी स्वाभाविक चित्रण हुआ है। इनके कथा-साहित्य को ग्रामीण जीवन का दर्पण कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.विजयदान देथा, 'उजाले के मुसाहिब', ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2000, पृष्ठ-18

2.वही, 'छब्बीस कहानियाँ,' वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011, पृष्ठ - भूमिका से

3.वही, 'त्रिकोण', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012, पृष्ठ -70-71

4.वही, पृष्ठ -123

5.वही, पृष्ठ -111

6.विजयदान देथा, 'उजाले के मुसाहिब', ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2000, पृ0-154

7.वही, पृष्ठ -38

8.विजयदान देथा, 'छब्बीस कहानियाँ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011, पृष्ठ -120